INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH IN COMMERCE, IT, ENGINEERING AND SOCIAL SCIENCES (IJRCIESS) ISSN: 2349-7793
Vol. 4 No. 9 (2010): September
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

सतत विकास के मार्ग के रूप में आध्यात्मिकता

डॉ0 केशरी नन्दन मिश्रा

सदस्य, माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश

हर दिन वैज्ञानिकों ने ग्रह पृथ्वी, मानव जाति, पर्यावरण और पारिस्थितिकी, जलवायु, मनुष्य और प्रकृति के बीच संघर्ष, आदि के बारे में कई सिद्धांत और परिकल्पनाएं सामने रखीं। इनमें से, जो प्रश्न तर्कसंगत मन को सबसे अधिक उलझाता है, वह है ग्रह पृथ्वी पर मानव जाति का अस्तित्व। जबकि इस प्रश्न का उत्तर जानने की खोज कभी समाप्त नहीं हुई है, पहले से ही ऐसे कई सिद्धांत हैं जो वैज्ञानिक पूर्ववृत्त द्वारा समर्थित सैकड़ों या हजारों या लाखों वर्षों में मानव विलुप्त होने की भविष्यवाणी करते हैं। हर दिन एक व्यक्ति को लगता है कि बढ़ती मानव संघर्ष, स्वार्थी मानव प्रकृति और एक विकासशील अभी तक अपमानजनक ग्रह के साथ पृथ्वी एक विशाल आग के गोले में उड़ने जा रही है। यही कारण था कि दुनिया के नेता इस संभावित तबाही का एक व्यवहार्य समाधान प्रदान करने के लिए एक साथ आए जिसका मानव सामना कर सकता है, जो कि सतत विकास है। यह ग्रह को स्थायी नुकसान पहुंचाए बिना और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे बनाए रखने के बिना मानव विकास का एक आशाजनक तरीका है। लेकिन, मानव विलुप्त होने का तथ्य अभी भी हर इंसान को परेशान करता है। यह दृढ़ विश्वास इस तथ्य से काफी हद तक स्पष्ट है कि मनुष्य ब्रह्मांड में अन्य रहने योग्य ग्रहों की लगातार जांच कर रहे हैं, मशीनों को खुद से ज्यादा स्मार्ट विकसित कर रहे हैं, प्रयोगशाला में जीव विकसित कर रहे हैं और लगातार खुद को पर्यावरण से अलग और बड़ा साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। इस तरह मनुष्य न केवल सतत विकास के पथ से हटेगा, बल्कि इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

मूल शब्द: सतत विकास, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, जलवायु, प्रकृति

प्रस्तावना

इस पत्र का मुख्य उद्देश्य "स्थायी विकास के मार्ग के रूप में आध्यात्मिकता" पर विस्तार से चर्चा करना है। यह मूल रूप से आध्यात्मिकता की एक सर्व-उद्देश्यीय अवधारणा के सामंजस्य की भावना का पता लगाने के लिए जाता है, जिसका एक मात्र मानव के बजाय एक सार्वभौमिक महत्व है। यह अंत करने के लिए, पेपर सात महत्वपूर्ण वर्गों के दौरान तर्कों के उचित सेट का अनुसरण करता है। आरंभ करने के लिए, "आध्यात्मिकता की अवधारणा" आध्यात्मिकता की बुनियादी बारीकियों पर चर्चा करती है। इसके अलावा आध्यात्मिकता के भीतर मानक अवधारणाओं जैसे, आध्यात्मिक अनुभव, विभिन्न प्रकार की आध्यात्मिकता और इसके महत्व पर चर्चा करना। "पर्यावरण आध्यात्मिकता", यह खंड विशिष्ट रूप से पर्यावरणीय आध्यात्मिकता पर केंद्रित है और यह मानवता को सिखाने का प्रयास करता है। "मनुष्य बनाम प्रकृति" उस पारिस्थितिकी में मौजूद मौलिक संघर्ष और संकट पर चर्चा करता है जहां मनुष्य को मूल में रखा गया है। "सतत विकास लक्ष्य" खंड सभी 17 लक्ष्यों के अभिसरण पर चर्चा और विश्लेषण करता है और संभावित प्रश्न पर चर्चा करता है कि दुनिया को उन सभी को प्राप्त करने की क्या आवश्यकता हो सकती है। अगला खंड "खुशी: वह सब जो आवश्यक है" सतत विकास के दृष्टिकोण के लिए एक स्थायी दृष्टि देने की कोशिश करता है। हालाँकि, "स्थिरता के लिए रोडमैप के रूप में आध्यात्मिकता के तहत अवधारणाओं को एकीकृत करना" खंड में कुछ विश्लेषणों के बाद, चर्चा किए गए सभी डोमेन के संबंध और सापेक्षता की और खोज के साथ समाप्त होता है।

अध्यात्म की अवधारणा

आध्यात्मिकता को जब व्युत्पत्ति की दृष्टि से देखा जाता है तो इसकी उत्पत्ति "आत्मा" शब्द से हुई है। इसका मूल रूप से अर्थ है "मनुष्य और पशु में सजीव और महत्वपूर्ण सिद्धांत"। एक स्पेक्ट्रम के धार्मिक से मानवतावादी अंत तक सीमा को परिभाषित करने के कई और विविध प्रयास। (पीटर सी। हिल केनेथ ॥। परगामेंट राल्फ डब्ल्यू। हूड जूनियर, 2000)। सामान्य तौर पर, यह शब्द एक प्रामाणिक मानव जीवन (पहाड़ी, 1989) के निहितार्थों को खोजने, अनुभव करने और जीने के दृष्टिकोण को दर्शाता है। इसे "पवित्र या उत्कृष्ट के साथ संबंध" (कोएनिग, मैककुलो, और लार्सन, 2001.) के रूप में भी परिभाषित किया गया है। इसलिए, तात्कालिक घटना के रूप में परिभाषित होने के बजाय आध्यात्मिकता को एक शाश्वत अनुभव के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह सहज, भावात्मक और शाश्वत सत्य से जुड़ने का अनुभव है। इसे ब्रह्मांड के बारे में सच्चाई के मानवतावादी अहसास के रूप में समझा जा सकता है। यह उन सभी सवालों के जवाब देता है जो अज्ञात हैं लेकिन बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे मानव जाति के दुखों का समाधान हो सकते हैं। अध्यात्म को समझने के लिए इसके विभिन्न प्रकारों को समझना होगा। आध्यात्मिकता को मोटे तौर पर 'चार डोमेन' (जॉन फिशर, 2012) में विभाजित किया जा सकता है। इस पत्र के संबंध में, एक महत्वपूर्ण क्षेत्र जो महत्वपूर्ण है वह है पर्यावरणीय आध्यात्मिकता।

पर्यावरण आध्यात्मिकता

यह भौतिक और जैविक के लिए देखभाल और पोषण से परे है, विस्मय और आश्चर्य की भावना के लिए और कुछ के लिए, पर्यावरण के साथ एकता की धारणा (जॉन फिशर, 2012)। पर्यावरणीय आध्यात्मिकता सभी सार्वभौमिक प्राणियों की अविभाज्य एकता और परस्पर संबंध की प्राप्ति है। मनुष्य के वर्तमान मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण के कारण हमें इस क्षेत्र में गहराई से खुदाई करने की आवश्यकता है। मनुष्य एक भौतिकवादी, व्यक्तिवादी और अवसरवादी प्राणी बन गया है। दार्शनिक शब्दजाल, जैसे कि शून्यवाद, मानवशास्त्रवाद और संशयवाद का आश्रय लेते हुए, मनुष्यों ने अपनी संकीर्णतावादी इच्छाओं के लिए पर्यावरण का दोहन करने के लिए खुद को पर्याप्त शक्तिशाली मान लिया है। केवल विश्व को पवित्र बनाकर, पृथ्वी को सृजन में बदलकर, हम पर्यावरण संकट की समस्या से संपर्क कर सकते हैं और मरम्मत की दिशा में काम कर सकते हैं (ट्रेसी, 2009)। इसलिए, वास्तव में पृथ्वी को एक पवित्र स्थान के रूप में विकसित करने के लिए, मनुष्य और प्रकृति के बीच संबंध और दोनों के बीच जहां चीजें गलत हो रही हैं, को समझना अनिवार्य है।

मनुष्य बनाम प्रकृति

अतीत में, लोग प्रकृति के साथ सद्भाव में रहते थे; उन्होंने उन सभी को बुलाया जो उनके नाम से पाए गए थे और जीवन की तालिका को ग्रह के सभी प्राणियों के साथ साझा किया (इलिजा काजटेज़, 2011)। मनुष्य को आमतौर पर प्रकृति की सबसे बुद्धिमान रचना माना जाता है। कहा जाता है कि इससे दोनों सिरों के बीच संतुलन बना। दुर्भाग्य से, आज का संपत्ति का आदमी, भौतिक संपदा का कब्जा और संचय खतरनाक बीमारियों से पीड़ित है: अभिमान, सतहीपन, अन्य लोगों के जीवन को नियंत्रित करने और प्रबंधित करने की शक्ति के साथ आकर्षण और विनम्र प्रकृति (रिपोर्ट, 1999)। मनुष्य ने पहले ही मानव जाति और सर्वशक्तिमानता के बुलबुले के भीतर रहने वाली प्रकृति को बहुत नुकसान पहुँचाया है। इस राज्य के अस्तित्व में आने के लिए मानव-केंद्रितता के भ्रम को सबसे अधिक दोषी ठहराया जाना चाहिए। मनुष्य यह भूल जाते हैं कि प्रकृति के साथ उनका संबंध वास्तव में चक्रीय है। लेकिन, जो प्रकृति के पास है वह एक शासक और शासित का है। प्रकृति अपने भीतर सुरक्षित महसूस करने के लिए इंसानों के लिए सब कुछ करेगी। लेकिन, अगर यह उस तरह से नहीं जाता है, तो प्रकृति ने समय-समय पर खुद को मनुष्य से अधिक शक्तिशाली साबित किया है और अनंत काल तक ऐसा करती रहेगी। मनुष्य और प्रकृति के बीच एक तटस्थ

संतुलन के लिए, मनुष्य को अपनी इच्छाओं, और दुनिया पर नियंत्रण करने के लिए समाधि में कटौती करने की आवश्यकता है। पर्यावरण अध्यात्मवाद मानव जाति के बीच इस महामारी का अचूक इलाज लगता है। इसमें मानव जाति को अविभाज्यता और मनुष्य और प्रकृति के शाश्वत संबंध की जड़ों तक ले जाने की क्षमता है।

सतत विकास लक्ष्य

सतत विकास ग्रह को परिस्थितिजन्य और क्षणिक क्षति किए बिना मानव जाति को विकसित और प्रगति करने में मदद करने की अवधारणा है। मनुष्य के स्वार्थी और विनाशकारी प्रकृति से ध्यान हटाकर, सतत विकास के विचार के पीछे के मूल्य मनुष्य के दूसरे मानवीय और जागृत पक्ष को प्रस्तुत करते हैं। यह सतत विकास का विचार है जो मानवता में विश्वास बहाल करने और एक बेहतर दुनिया की आशा में मदद करता है। 'वे वैश्विक समस्याओं को परिभाषित करते हैं और वैश्विक समुदाय के रूप में काम करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक लक्ष्यों की पहचान करते हैं' (मेथोडिस्ट वर्ल्ड डेवलपमेंट एंड रिलीफ)। लक्ष्य गरीबी, जलवायु कार्रवाई, भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, स्वच्छ ऊर्जा, शांति, संस्थानों और कई अन्य मुद्दों को संदर्भित करते हैं। क्रॉस कटिंग विषय महिलाएं और लैंगिक समानता, शिक्षा और सतत विकास और शिक्षा, लिंग और प्रौद्योगिकी हैं। सतत विकास लक्ष्यों का सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी लोगों के पास एक उचित जीवन स्तर और अवसर हैं जो दो बहुत ही बुनियादी मानवाधिकार हैं। संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की मून ने कहा है कि: "हमारे पास प्लान बी नहीं है क्योंकि कोई ग्रह बी नहीं है!"।

खुशी: वह सब कुछ जिसकी जरूरत है।

इस प्रकार दो लोग 'खुशी' शब्द के लिए एक ही अर्थ जोड़ सकते हैं और फिर भी खुशी की बहुत अलग अवधारणाएं हैं। नतीजतन, वे इस बात पर भिन्न हो सकते हैं कि कोई खुश है या नहीं, क्योंकि सॉक्रेटीस और पोलस इस बात पर मतभेद रखते थे कि मैसेडोनियाई तानाशाह आर्केलौस एक खुश व्यक्ति था या नहीं (प्लेटो, 1 9 73)। इसलिए, "खुशी क्या है?" का प्रश्न है। यह बहुआयामी है और इसके बहुआयामी उत्तर हैं। हालांकि, एक सामान्य अर्थ में, खुशी को उस आनंद की स्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसे कोई अनुभव करता है। यह आंतरिक कारणों या बाहरी परिस्थितियों से आ सकता है। ऐसा कहा जाता है, इसका अपना कोई सार नहीं है (दिलमैन, 1882)। इस पत्र की चिंता के साथ, यह प्रस्तावित किया जाना है कि खुशी ही वह सब कुछ है जिसकी आवश्यकता है। यह हमेशा एक अंतहीन मानवीय खोज रही है। आज मनुष्य बहुत ही दयनीय स्थिति में जी रहा है। व्यक्तिवाद, भौतिकवाद और रूढ़िवाद जैसी लोकप्रिय विचारधाराओं की शुरुआत के साथ। मनुष्य ने जीवन का सार खो दिया है। यानी खुशी। आज, मानव जाति विज्ञान, प्रौद्योगिकी, खगोल विज्ञान, पेट्रोलॉजी, तत्वमीमांसा आदि सभी विभिन्न क्षेत्रों पर काम कर रही है और कई सवालों के जवाब तलाश रही है। यहां तक कि बढ़ते संघर्ष, असहिष्णुता, उदासीनता, अज्ञानता और हिंसा की अनदेखी हो जाती है। खुशी मानव अस्तित्व के महामारी प्रश्न का उत्तर है। यहाँ जिस प्रकार की प्रसन्नता का उल्लेख किया जा रहा है वह है "स्थायी सुख"। स्थायी खुशी "वह खुशी है जो अन्य लोगों, पर्यावरण या आने वाली पीढ़ियों का शोषण किए बिना व्यक्ति, समुदाय और / या वैश्विक कल्याण में योगदान करती है" (ओ ब्रायन, 2010)। इस प्रकार, स्थिरता के साथ खुशी के संयोजन के और लाभों में हमारी पारस्परिक अन्योन्याश्रयता पर जोर देना, और खुशी के अध्ययन से अनुसंधान के माध्यम से स्थिरता के प्रयासों में पर्याप्त योगदान की संभावना के बारे में चर्चा उत्पन्न करना शामिल है। इरादा पर्यावरणीय गिरावट को खत्म करने या उससे बचने का नहीं है, बल्कि विषयों में

संबंध बनाने के साथ-साथ उन रास्तों के बारे में नई समझ प्रदान करना है जो स्थिरता और कल्याण की ओर ले जाते हैं (ओ'ब्रायन सी।, 2013)।

स्थिरता के रोडमैप के रूप में आध्यात्मिकता के तहत अवधारणाओं को एकीकृत करना

समापन खंड में, यह पेपर सभी कथित अवधारणाओं को एकीकृत करने का प्रयास करता है, जो स्थिरता के लिए एक रोडमैप प्रदान करता है। एक दर्शन के रूप में "आध्यात्मिकता" मनुष्य को कई प्रथाओं से परिचित कराती है जो मानव को स्वयं, दूसरों के साथ, पर्यावरण और सर्वोच्च शक्ति के साथ गहरे और शुद्ध स्तर पर जुड़ने में मदद करती है। इनमें से कुछ प्रथाएं हैं, कृतज्ञता, गहरे मानवीय संबंध, क्षमा, उदारता, साम्यवाद और बहुत कुछ। आध्यात्मिकता के आवश्यक उपहारों में से एक "खुशी" है। खुशी मन की सर्वोत्कृष्ट अवस्था है जो किसी को आध्यात्मिक मन की स्थिति तक पहुँचने में मदद करती है और इसके विपरीत। इसके संबंध में, जब सतत विकास की बात की जाती है, तो यह न केवल मात्रात्मक लक्ष्यों को बल्कि गुणात्मक लक्ष्यों को भी संदर्भित करता है। इसलिए, स्थायी खुशी एक ऐसी अवस्था है जो मानव जाति को उन (मात्रात्मक) लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है। आध्यात्मिकता का एक अन्य आयाम जिसकी विस्तृत रूप से इस पत्र में चर्चा की गई है, वह है "पर्यावरणीय आध्यात्मिकता"। मनुष्य और प्रकृति के बीच संबंधों को ध्यान में रखते हुए, आध्यात्मिकता ही एकमात्र समाधान है जो मनुष्य को प्रकृति के साथ गहरे और सार्थक स्तर पर फिर से जोड़ने में मदद कर सकती है और अपने और प्रकृति के बीच शांति बनाकर ग्रह को विकसित कर सकती है। आध्यात्मिक स्तर पर पर्यावरण को समझने से, मनुष्य को इसे और अधिक तोड़फोड़ या हेरफेर करने की कोशिश करने से रोकेगा। फिर, साम्प्रदायिक आध्यात्मिकता जैसे आध्यात्मिकता के अन्य पहलुओं को समझने से मनुष्य को "एकता", आत्मा, आत्मा और भौतिक क्षेत्रों की एकता की भावना को जन्म देते हुए अधिक सहानुभूतिपूर्ण और दयालु बनने में मदद मिलेगी। इस तरह, आध्यात्मिकता मनुष्य को सभी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, यौन और वैचारिक सीमाओं को पार करने में मदद कर सकती है। जो दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर जगह बना देगा। अभी के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए। क्योंकि, आध्यात्मिक प्राणियों से युक्त दुनिया एक स्थायी, स्थायी और प्रिय ग्रह के अलावा और कुछ नहीं होगी।

References

- Dilman, I. (1882). Happiness. Journal of Medical Ethics, 199-202.
- Hill, B. (1989). 'Spiritual development' in the Education Reform Act: A source of acrimony, apathy or accord? . Brit. J. Educ. Stud., 37, 169-182.
- Ilija Kajtez. (2011). Man and nature. Arch Oncol, 86-88.
- Koenig, H., McCullough, M., & Larson, D. (2001.). Handbook of Religion and Health. Oxford, UK: Oxford University Press.
- O’Brien, C. (2010). Sustainability, happiness and education. Journal of Sustainability.
- Peter C. Hill Kenneth II. Pargament Ralph W. Hood Jr., M. E. (2000). Conceptualizing Religion and Spirituality: Points of Commonality, Points of Departure. Journal for theory of social behaviour, 51-77.
- Report, U. H. (1999). Globalization with a human face. UN.
- Tracey, D. (2009). Environmental Spirituality. International Journal of New Perspectives, 17-21.